भारतीय परिप्रेक्ष्य में समाज एवं संगीत व्यवसाय का पारस्परिक संबंध

डॉ. शुप्रीत सिंह[1], हसनदीप सिंह[2]

[1]सहायक प्रोफेसर, विज़ुअल एंड परफोर्मिंग आर्ट्स विभाग, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर

[2]शोधार्थी, विज़ुअल एंड परफोर्मिंग आर्ट्स विभाग, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर

सारांश

भारतीय संस्कृति में संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा आर्थिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। समाज और संगीत का संबंध अत्यंत प्राचीन एवं घनिष्ठ है। जिस प्रकार समाज की संरचना, मान्यताएँ, परम्पराएँ तथा आर्थिक परिस्थितियाँ समय के साथ परिवर्तित होती रही हैं, उसी प्रकार संगीत का स्वरूप तथा उसका व्यावसायिक पक्ष भी निरंतर विकसित होता रहा है। प्रारम्भिक काल में संगीत का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति, धार्मिक अनुष्ठानों की सिद्धि तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति था, किन्तु कालान्तर में यह जीविकोपार्जन एवं व्यवसाय का भी महत्वपूर्ण साधन बन गया। वर्तमान समय में संगीत शिक्षा, मंचीय प्रस्तुति, रिकॉर्डिंग, प्रसारण, फिल्म उद्योग, डिजिटल मीडिया तथा ऑनलाइन मंचों ने संगीत व्यवसाय को व्यापक आयाम प्रदान किए हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य समाज एवं संगीत व्यवसाय के पारस्परिक संबंध का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि समाज ने संगीत व्यवसाय के विकास को किस प्रकार प्रभावित किया तथा संगीत ने सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक संरक्षण एवं आर्थिक गतिविधियों में किस प्रकार योगदान दिया।

कुंजी शब्द: समाज, संगीत व्यवसाय, भारतीय संगीत, सांस्कृतिक विकास, संगीत शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन, कला एवं संस्कृति।

प्रस्तावना

समाज मानव जीवन की आधारभूत इकाई है, जिसके अंतर्गत व्यक्ति अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। व्यक्ति और समाज के मध्य स्थापित पारस्परिक संबंध ही विभिन्न ज्ञान-विज्ञान, कला एवं व्यवसायों के विकास का आधार बनते हैं। संगीत कला भी ऐसी ही एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है, जिसका विकास समाज की संरचना, मान्यताओं और परिवर्तित परिस्थितियों के साथ निरंतर होता रहा है। इसी परस्पर सहयोग की प्रक्रिया से विभिन्न व्यवसायों का विकास हुआ। मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विविध प्रकार के कार्यों का विभाजन हुआ और समय के साथ वे कार्य व्यवसाय के रूप में स्थापित होते गए। डॉ पूनम दत्त का कहना है की "मनुष्य स्वयं के ज्ञान, कौशल, समय, श्रम, व वस्तु आदि की सेवाओं का आदान प्रदान अपनी आवश्यकताओं अनुसार करता है"।[1]

संगीत भी मानव जीवन की मूलभूत सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में से एक है। मानव ने अपनी भावनाओं, अनुभूतियों, आस्थाओं तथा सामूहिक अनुभवों को व्यक्त करने के लिए संगीत का सहारा लिया। भारतीय परम्परा में संगीत को

*Corresponding Author Email: shupreet@gmail.com
Published: 27 June 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i6.45800
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

केवल कला नहीं, बल्कि साधना, उपासना तथा आत्मानुभूति का माध्यम माना गया है। सामवेद से लेकर आधुनिक संगीत मंचों तक संगीत ने भारतीय समाज की चेतना को निरन्तर प्रभावित किया है। यद्यपि प्रारम्भिक काल में संगीत का उद्देश्य आध्यात्मिक एवं धार्मिक था, तथापि इसके साथ-साथ उसका व्यावसायिक स्वरूप भी विकसित होता रहा। धार्मिक अनुष्ठानों में मंत्रोच्चार, मंदिरों में भक्ति-संगीत, राजदरबारों में गायन-वादन तथा सामाजिक उत्सवों में संगीत की उपस्थिति इस तथ्य की पुष्टि करती है कि संगीत समाज के प्रत्येक स्तर से जुड़ा रहा है। समय के साथ संगीत से जुड़े कलाकारों, शिक्षकों, वादकों, गायकों तथा आयोजकों का एक विशिष्ट व्यावसायिक वर्ग विकसित हुआ जिसने संगीत को जीविकोपार्जन का माध्यम बनाया।

आधुनिक युग में संगीत व्यवसाय का स्वरूप अत्यंत व्यापक हो गया है। आज संगीत केवल मंचीय प्रस्तुतियों तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा, प्रसारण, रिकॉर्डिंग, फिल्म, विज्ञापन, डिजिटल मीडिया, ऑनलाइन शिक्षण तथा सांस्कृतिक उद्योगों का महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। तकनीकी विकास ने संगीत को वैश्विक स्तर पर पहुँचाने का कार्य किया है, जिसके परिणामस्वरूप संगीत व्यवसाय की नई संभावनाएँ विकसित हुई हैं। इस संदर्भ में समाज एवं संगीत व्यवसाय के संबंध का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। यह समझना आवश्यक है कि सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक संरचना, राजनीतिक परिस्थितियाँ तथा सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ संगीत व्यवसाय को किस प्रकार प्रभावित करती हैं और संगीत किस प्रकार समाज के विकास में योगदान देता है।

शोध पद्धति

यह शोध मुख्यतः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए भारतीय संगीत इतिहास, संगीत शिक्षा, संगीत समाजशास्त्र तथा संगीत व्यवसाय से संबंधित उपलब्ध पुस्तकों, शोध-पत्रों एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। विषय की ऐतिहासिक एवं समकालीन परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए शोध के निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

समाज एवं संगीत व्यवसाय का पारस्परिक संबंध

समाज एवं संगीत व्यवसाय का संबंध परस्पर निर्भरता पर आधारित है। समाज संगीत को संरक्षण, श्रोता, संरक्षक तथा आर्थिक आधार प्रदान करता है, जबकि संगीत समाज को सांस्कृतिक पहचान, मनोरंजन, आध्यात्मिक संतोष तथा सामाजिक समरसता प्रदान करता है। जब समाज की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है, तब कला एवं संगीत के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। कलाकारों को संरक्षण प्राप्त होता है, संगीत संस्थाओं की स्थापना होती है तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का विस्तार होता है। इसके विपरीत सामाजिक अथवा राजनीतिक अस्थिरता की स्थिति में संगीत व्यवसाय भी प्रभावित होता है।

भारतीय इतिहास में अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहाँ समाज और संगीत ने एक-दूसरे को प्रभावित किया। वैदिक काल में धार्मिक जीवन ने संगीत को दिशा प्रदान की। मध्यकाल में राजाश्रय ने संगीत व्यवसाय को विकसित किया। आधुनिक काल में शिक्षा, संचार माध्यमों और तकनीकी विकास ने संगीत को एक संगठित उद्योग का स्वरूप प्रदान किया। इस प्रकार स्पष्ट है कि समाज और संगीत व्यवसाय एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनों का विकास परस्पर सहयोग एवं प्रभाव के आधार पर होता है। भारतीय संगीत की समृद्ध परम्परा इसी पारस्परिक संबंध का परिणाम है।

1. प्राचीन काल में समाज और संगीत व्यवसाय

भारतीय संगीत का इतिहास अत्यंत प्राचीन एवं गौरवशाली रहा है। भारतीय सभ्यता के प्रारम्भिक चरण से ही

संगीत मानव जीवन का अभिन्न अंग रहा है। वैदिक साहित्य में संगीत के उल्लेख यह प्रमाणित करते हैं कि संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं था, बल्कि धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का आधार भी था। सामवेद को भारतीय संगीत का मूल स्रोत माना जाता है, क्योंकि उसमें मंत्रों का स्वर सहित गान निर्धारित किया गया था। प्राचीन भारतीय समाज में संगीत का संबंध मुख्यतः धार्मिक अनुष्ठानों, यज्ञों तथा आध्यात्मिक साधना से था। उस समय संगीत का उद्देश्य आर्थिक लाभ अर्जित करना नहीं था, बल्कि ईश्वर की आराधना, मानसिक शुद्धि तथा आध्यात्मिक उन्नति था। वैदिक ऋषियों का विश्वास था कि उचित स्वर एवं लय में किए गए मंत्रोच्चार से सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है तथा अनुष्ठानों की सफलता सुनिश्चित होती है। यही कारण था कि संगीत का ज्ञान प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को समाज में विशेष सम्मान प्राप्त था।

प्राचीन समाज में शिक्षा का आधार गुरुकुल प्रणाली थी। संगीत शिक्षा भी गुरु-शिष्य परम्परा के माध्यम से प्रदान की जाती थी। गुरु अपने शिष्यों को संगीत की सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक शिक्षा देते थे। यह शिक्षा केवल कलात्मक प्रशिक्षण नहीं थी, बल्कि जीवन-दर्शन, अनुशासन और सांस्कृतिक मूल्यों का भी संवाहक थी। इस व्यवस्था ने संगीत को एक संगठित स्वरूप प्रदान किया और संगीतज्ञों का एक विशिष्ट वर्ग विकसित हुआ। डॉ शरचचंद्र श्रीधर परांजपे लिखते हैं कि "व्यवसाय की दृष्टि से हीन माने जाने पर भी एक कला की दृष्टि से संगीत का स्थान सर्वोच्च था तथा समाज में संगीत जीवन तथा शिक्षा दीक्षा का अभिन्न अंग था"।[2]

2. मध्यकाल में समाज और संगीत व्यवसाय का विकास

मध्यकाल भारतीय संगीत के इतिहास में परिवर्तन एवं विकास का महत्वपूर्ण काल रहा है। इस काल में राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों में व्यापक परिवर्तन हुए, जिनका प्रभाव संगीत पर भी पड़ा। मुस्लिम शासकों के आगमन के साथ भारतीय संगीत का संपर्क फारसी एवं मध्य एशियाई संगीत परम्पराओं से हुआ, जिसके परिणामस्वरूप संगीत के स्वरूप, शैली और प्रस्तुति में नए आयाम विकसित हुए। मध्यकाल में संगीत का धार्मिक स्वरूप बना रहा, किन्तु इसके साथ-साथ उसका दरबारी एवं व्यावसायिक स्वरूप भी सशक्त हुआ। राजाओं एवं नवाबों ने संगीतज्ञों को संरक्षण प्रदान किया। इस काल में अनेक नई गायन शैलियों का विकास हुआ। ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, टप्पा, ग़ज़ल तथा कव्वाली जैसी शैलियों ने संगीत को अधिक लोकप्रिय बनाया। इन शैलियों के विकास के साथ संगीतज्ञों की मांग बढ़ी और संगीत व्यवसाय को नई दिशा मिली।

3. राजदरबारी संरक्षण और संगीत व्यवसाय

भारतीय संगीत के विकास में राजदरबारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। प्राचीन और मध्यकाल दोनों में राजाओं तथा शासकों ने संगीत को संरक्षण प्रदान किया, किन्तु मध्यकाल में यह संरक्षण अधिक संगठित एवं प्रभावशाली रूप में दिखाई देता है। राजदरबार केवल राजनीतिक शक्ति के केंद्र नहीं थे, बल्कि कला एवं संस्कृति के भी प्रमुख केंद्र थे। राजा अपने दरबारों में श्रेष्ठ संगीतज्ञों को आमंत्रित करते थे और उन्हें आर्थिक सहायता, आवास, सम्मान तथा पुरस्कार प्रदान करते थे। इससे कलाकारों को अपनी कला के विकास हेतु अनुकूल वातावरण प्राप्त होता था। सम्राट अकबर का दरबार संगीत संरक्षण का सर्वोत्तम उदाहरण माना जाता है। तानसेन जैसे महान संगीतज्ञों को राजाश्रय प्राप्त था। अकबर ने संगीत को विशेष महत्व दिया और अनेक कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया। परिणामस्वरूप संगीत के क्षेत्र में नवाचार और विकास को प्रोत्साहन मिला।

राजदरबारी संरक्षण के कारण कलाकारों को आर्थिक सुरक्षा प्राप्त हुई। इससे वे जीविकोपार्जन की चिंता से मुक्त होकर कला-साधना कर सके। अनेक नई रचनाएँ, राग-रागिनियाँ तथा प्रस्तुति शैलियाँ इसी वातावरण में विकसित हुईं। हालाँकि राजाश्रय के कुछ सीमित पक्ष भी थे। कलाकारों को प्रायः अपने संरक्षक की रुचियों एवं

अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य करना पड़ता था। कई बार संगीत का उद्देश्य आध्यात्मिक साधना से हटकर मनोरंजन तक सीमित हो जाता था। फिर भी यह तथ्य निर्विवाद है कि राजदरबारों ने संगीत व्यवसाय को स्थिरता एवं प्रतिष्ठा प्रदान की।

4. आधुनिक काल में संगीत व्यवसाय का विकास

आधुनिक काल भारतीय संगीत के इतिहास में व्यापक परिवर्तन और विस्तार का काल माना जाता है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा बीसवीं शताब्दी में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं तकनीकी परिवर्तनों ने संगीत के स्वरूप को गहराई से प्रभावित किया। इस काल में संगीत राजदरबारों एवं धार्मिक संस्थानों की सीमाओं से निकलकर समाज के व्यापक वर्ग तक पहुँचा। परिणामस्वरूप संगीत व्यवसाय के नए आयाम विकसित हुए और कलाकारों के लिए रोजगार एवं आर्थिक उन्नति के अनेक अवसर उपलब्ध हुए। ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय समाज में आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ। इसके प्रभाव से संगीत शिक्षा का भी संस्थागत स्वरूप विकसित होने लगा। पहले जहाँ संगीत शिक्षा मुख्यतः गुरु-शिष्य परम्परा पर आधारित थी, वहीं अब विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में संगीत विषय के रूप में पढ़ाया जाने लगा। इससे संगीत को एक व्यवस्थित शैक्षणिक विषय के रूप में मान्यता प्राप्त हुई तथा संगीत शिक्षकों के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए।

संगीत शिक्षा और रोजगार

वर्तमान समय में संगीत शिक्षा संगीत व्यवसाय का एक महत्वपूर्ण आधार बन चुकी है। विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, संगीत अकादमियों तथा निजी संस्थानों में संगीत शिक्षकों की निरंतर आवश्यकता बनी रहती है। संगीत में स्नातक, स्नातकोत्तर तथा शोध स्तर की शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में अध्यापन कार्य कर सकते हैं। संगीत शिक्षा केवल औपचारिक संस्थानों तक सीमित नहीं है। निजी संगीत प्रशिक्षण, ऑनलाइन शिक्षण, कार्यशालाएँ तथा अल्पकालीन पाठ्यक्रम भी संगीत व्यवसाय के महत्वपूर्ण क्षेत्र बन चुके हैं। "संगीत शिक्षा में यह सुधार अथवा परिवर्तन पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर व पंडित विष्णु नारायण भातखंडे के अथक प्रयासों से ही संभव हो सका है इसके साथ ही स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार द्वारा भी संगीत कला व शिक्षा के प्रोत्साहन के लिए अनेक कल्याणकारी प्रयास किए गए हैं छात्र-छात्राओं के संगीत ज्ञान के विकास में शिक्षक का विशेष महत्व रहा है"।[3]

इसके अतिरिक्त संगीत अनुसंधान, संगीत लेखन, पाठ्यक्रम निर्माण तथा शैक्षणिक प्रशासन जैसे क्षेत्रों में भी रोजगार की संभावनाएँ बढ़ी हैं। संगीत शिक्षा के विस्तार ने संगीत व्यवसाय को स्थायित्व प्रदान किया है तथा कलाकारों को नियमित आय के अवसर उपलब्ध कराए हैं।

मंच प्रदर्शन और संगीत व्यवसाय

मंचीय प्रदर्शन संगीत व्यवसाय का सबसे प्राचीन और प्रभावशाली स्वरूप रहा है। आधुनिक काल में संगीत सम्मेलनों, सांस्कृतिक उत्सवों, संगीत समारोहों तथा सार्वजनिक प्रस्तुतियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इन आयोजनों ने कलाकारों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के साथ-साथ आर्थिक लाभ अर्जित करने का अवसर प्रदान किया।"कोई भी सफल कलाकार जितने अधिक मंच प्रदर्शन करता है उतना ही अधिक उसमें आत्मविश्वास बढ़ता जाता है"।[4]

मंच प्रस्तुतियों से केवल कलाकार ही लाभान्वित नहीं होते, बल्कि आयोजक, ध्वनि विशेषज्ञ, प्रकाश विशेषज्ञ, वाद्य-निर्माता, प्रचारक तथा अन्य सहयोगी भी रोजगार प्राप्त करते हैं। इस प्रकार संगीत व्यवसाय एक व्यापक

आर्थिक गतिविधि का रूप धारण कर लेता है।

आकाशवाणी और दूरदर्शन की भूमिका

बीसवीं शताब्दी में रेडियो और दूरदर्शन के आगमन ने संगीत व्यवसाय को अभूतपूर्व गति प्रदान की। आकाशवाणी ने भारतीय संगीत के प्रचार-प्रसार में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रेडियो के माध्यम से संगीत देश के दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचा और कलाकारों को व्यापक पहचान प्राप्त हुई।

आकाशवाणी द्वारा आयोजित ऑडिशन प्रणाली ने संगीतज्ञों को व्यावसायिक मंच प्रदान किया। स्वीकृत कलाकारों को नियमित प्रसारण के अवसर तथा पारिश्रमिक प्राप्त होने लगा। इससे संगीत व्यवसाय को स्थायित्व और सम्मान मिला।" आकाशवाणी की गतिविधियों में रेडियो संगीत सम्मेलन, भारतीय संगीत पर परिचर्चा व गोष्ठियाँ, संगीतक प्रतियोगिताएँ, रविवारीय संगीत कार्यक्रम, शास्त्रीय संगीत का दैनिक प्रसारण, संगीत सम्मेलनों का प्रसारण, ऑल इंडिया रेडियो की संगीतक प्रतियोगिता आदि कुछ कार्यक्रम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं"।[5] अतः कहा जा सकता है कि रेडियो और दूरदर्शन ने संगीत को केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहने दिया, बल्कि उसे एक संगठित व्यावसायिक क्षेत्र के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

फिल्म उद्योग और संगीत व्यवसाय

भारतीय फिल्म उद्योग संगीत व्यवसाय का सबसे बड़ा और प्रभावशाली क्षेत्र माना जाता है। चलचित्रों के विकास के साथ संगीत का महत्व अत्यधिक बढ़ गया। फिल्मों में गीत-संगीत की लोकप्रियता ने संगीतज्ञों, गायकों, वादकों, संगीतकारों तथा गीतकारों के लिए विशाल रोजगार बाजार तैयार किया। फिल्म संगीत ने संगीत को जनसामान्य तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। फिल्मी गीतों की लोकप्रियता ने अनेक कलाकारों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पहचान प्रदान की। इसके साथ ही संगीत रिकॉर्डिंग, संगीत निर्माण तथा वितरण से जुड़े अनेक व्यवसाय विकसित हुए। फिल्म संगीत के माध्यम से भारतीय संगीत ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान स्थापित की। अनेक भारतीय कलाकारों ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सफलता प्राप्त की, जिससे संगीत व्यवसाय के वैश्विक विस्तार को बल मिला।

रिकॉर्डिंग उद्योग और संगीत उत्पादन

ध्वनि रिकॉर्डिंग तकनीक के विकास ने संगीत व्यवसाय में क्रांतिकारी परिवर्तन उत्पन्न किए। ग्रामोफोन रिकॉर्ड से लेकर कैसेट, सीडी और डिजिटल रिकॉर्डिंग तक की यात्रा ने संगीत के उत्पादन एवं वितरण की प्रक्रिया को अत्यंत सरल बना दिया।"रिकॉर्डिस्ट ध्वनि मुद्रण में अपनी भूमिका निभाता है। गीत की रिकॉर्डिंग भी एक कला है जिसमें रिकॉर्डिस्ट अपने योग्यता से गीत को प्रभावोत्पादक बनाता है। रिकॉर्डिंग में वादक अपने वाद्य के साथ उपस्थित रहते हैं और रिकॉर्डिंग के समय वादन करते हैं"।[6] इस प्रकार रिकॉर्डिंग उद्योग ने कलाकारों को अपनी प्रस्तुतियों को स्थायी रूप में संरक्षित करने का अवसर प्रदान किया। इससे संगीत की पहुँच लाखों श्रोताओं तक संभव हुई। रिकॉर्ड कंपनियों ने संगीत निर्माण, प्रचार और विपणन को व्यवस्थित रूप प्रदान किया।

डिजिटल युग और संगीत व्यवसाय

इक्कीसवीं शताब्दी में डिजिटल तकनीक ने संगीत व्यवसाय का स्वरूप पूरी तरह बदल दिया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, यूट्यूब, संगीत स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म तथा ऑनलाइन शिक्षा ने संगीत को वैश्विक मंच प्रदान किया है। आज कलाकार किसी रिकॉर्ड कंपनी पर पूर्णतः निर्भर नहीं हैं। वे स्वयं अपनी प्रस्तुतियों को डिजिटल माध्यमों पर प्रकाशित कर सकते हैं। यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम, स्पॉटिफाई, एप्पल म्यूज़िक, तथा अन्य मंचों ने कलाकारों

को सीधे श्रोताओं तक पहुँचने का अवसर प्रदान किया है। डिजिटल मंचों के माध्यम से विज्ञापन, सदस्यता, लाइव स्ट्रीमिंग तथा ऑनलाइन कार्यक्रमों से आय अर्जित की जा सकती है। इससे संगीत व्यवसाय अधिक लोकतांत्रिक और सुलभ हुआ है। छोटे शहरों तथा ग्रामीण क्षेत्रों के कलाकार भी वैश्विक पहचान प्राप्त करने में सक्षम हुए हैं।

संगीत व्यवसाय और रोजगार के नवीन क्षेत्र

आधुनिक समय में संगीत व्यवसाय केवल गायन और वादन तक सीमित नहीं है। इसके अंतर्गत अनेक नए क्षेत्र विकसित हुए हैं, जैसे- संगीत निर्देशन, ध्वनि अभियांत्रिकी, संगीत उत्पादन, संगीत पत्रकारिता, संगीत समीक्षा, संगीत प्रबंधन, कार्यक्रम आयोजन, वाद्य निर्माण एवं विपणन, डिजिटल सामग्री निर्माण, ऑनलाइन संगीत शिक्षण, संगीत चिकित्सा आदि इन क्षेत्रों ने संगीत व्यवसाय को बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया है। आज संगीत से जुड़े हजारों लोग प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त कर रहे हैं।

संगीत व्यवसाय की चुनौतियाँ

यद्यपि आधुनिक युग में संगीत व्यवसाय ने उल्लेखनीय प्रगति की है, तथापि इसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। इन चुनौतियों का अध्ययन आवश्यक है क्योंकि वे संगीत व्यवसाय के भविष्य को प्रभावित करती हैं।

1. व्यावसायीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति

आधुनिक समय में संगीत का अत्यधिक व्यावसायीकरण हुआ है। अनेक बार आर्थिक लाभ की दृष्टि कलात्मक गुणवत्ता पर हावी हो जाती है। लोकप्रियता प्राप्त करने की होड़ में संगीत की शास्त्रीय एवं सांस्कृतिक गरिमा प्रभावित होने लगती है। इससे संगीत के मूल सौन्दर्य एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण की समस्या उत्पन्न होती है।

2. पारंपरिक संगीत का संरक्षण

वैश्वीकरण और आधुनिक मनोरंजन उद्योग के प्रभाव के कारण अनेक लोक एवं पारंपरिक संगीत शैलियाँ संकट का सामना कर रही हैं। नई पीढ़ी का झुकाव प्रायः त्वरित लोकप्रियता वाले संगीत की ओर अधिक दिखाई देता है। परिणामस्वरूप अनेक प्राचीन संगीत परम्पराओं के लुप्त होने का खतरा उत्पन्न हो गया है।

3. आर्थिक असमानता

संगीत उद्योग में कुछ प्रसिद्ध कलाकारों को अत्यधिक आर्थिक लाभ प्राप्त होता है, जबकि अनेक प्रतिभाशाली कलाकार पर्याप्त अवसरों और संसाधनों के अभाव में संघर्ष करते रहते हैं। यह असमानता संगीत व्यवसाय की एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

4. कॉपीराइट और बौद्धिक संपदा अधिकार

डिजिटल तकनीक ने संगीत के प्रसार को आसान बनाया है, लेकिन इसके साथ ही कॉपीराइट उल्लंघन की समस्या भी बढ़ी है। बिना अनुमति के संगीत सामग्री का उपयोग कलाकारों और निर्माताओं के आर्थिक हितों को प्रभावित करता है। इसलिए बौद्धिक संपदा अधिकारों का संरक्षण संगीत व्यवसाय की महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है।

5. तकनीकी प्रतिस्पर्धा

तेजी से बदलती तकनीक के कारण कलाकारों को निरंतर नए उपकरणों, डिजिटल मंचों तथा तकनीकी प्रक्रियाओं से स्वयं को अद्यतन रखना पड़ता है। जो कलाकार तकनीकी परिवर्तनों के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते,

वे प्रतिस्पर्धा में पीछे रह सकते हैं।

संगीत व्यवसाय की संभावनाएँ

चुनौतियों के बावजूद संगीत व्यवसाय की संभावनाएँ अत्यंत व्यापक हैं। वर्तमान समय में यह क्षेत्र रोजगार, उद्यमिता तथा सांस्कृतिक विकास के दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण बन चुका है।

1. डिजिटल मंचों का विस्तार

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म संगीत व्यवसाय के विकास का सबसे बड़ा माध्यम बन चुके हैं। स्वतंत्र कलाकार बिना किसी मध्यस्थ के अपनी रचनाएँ विश्वभर में प्रस्तुत कर सकते हैं। इससे नए कलाकारों के लिए अवसरों का विस्तार हुआ है।

2. ऑनलाइन संगीत शिक्षा

ऑनलाइन शिक्षण ने संगीत शिक्षा को वैश्विक स्वरूप प्रदान किया है। आज भारत का एक शिक्षक विदेश में बैठे विद्यार्थी को भी संगीत सिखा सकता है। इससे संगीत शिक्षा और संगीत व्यवसाय दोनों का विस्तार हुआ है।

3. सांस्कृतिक पर्यटन

सांस्कृतिक पर्यटन के विकास के साथ संगीत कार्यक्रमों और संगीत उत्सवों का महत्व बढ़ा है। अनेक शहरों और क्षेत्रों की सांस्कृतिक पहचान संगीत समारोहों से जुड़ चुकी है। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था और संगीत व्यवसाय दोनों को लाभ प्राप्त होता है।

4. संगीत चिकित्सा

संगीत चिकित्सा वर्तमान समय में तेजी से विकसित हो रहा क्षेत्र है। मानसिक स्वास्थ्य, तनाव प्रबंधन तथा चिकित्सकीय उपचार में संगीत के उपयोग ने इस क्षेत्र में रोजगार की नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं।

5. अनुसंधान एवं नवाचार

संगीत अनुसंधान, संगीत प्रौद्योगिकी तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित संगीत निर्माण भविष्य के महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। इन क्षेत्रों में कार्य करने वाले विशेषज्ञों की मांग निरंतर बढ़ रही है।

निष्कर्ष

समाज एवं संगीत व्यवसाय का संबंध अत्यंत प्राचीन, गहन और बहुआयामी है। भारतीय समाज के विकास के साथ-साथ संगीत का स्वरूप भी निरंतर परिवर्तित होता रहा है। प्रारम्भिक काल में जहाँ संगीत मुख्यतः धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों से जुड़ा हुआ था, वहीं समय के साथ यह जीविकोपार्जन और व्यवसाय का महत्वपूर्ण साधन बन गया। प्राचीन काल में संगीत को सामाजिक एवं धार्मिक प्रतिष्ठा प्राप्त थी। मध्यकाल में राजाश्रय, भक्ति आंदोलन तथा सांस्कृतिक समन्वय ने संगीत व्यवसाय को सुदृढ़ आधार प्रदान किया। आधुनिक काल में संगीत शिक्षा, मंचीय प्रस्तुतियाँ, आकाशवाणी, दूरदर्शन, फिल्म उद्योग तथा रिकॉर्डिंग तकनीक ने संगीत व्यवसाय को व्यापक स्वरूप प्रदान किया। डिजिटल युग और वैश्वीकरण ने संगीत व्यवसाय को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक विस्तारित कर दिया है।

संगीत केवल आर्थिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक संरक्षण तथा राष्ट्रीय एकता का

महत्वपूर्ण माध्यम भी है। संगीत समाज को सांस्कृतिक पहचान प्रदान करता है, जबकि समाज संगीत को संरक्षण और विकास के अवसर प्रदान करता है। दोनों का संबंध परस्पर पूरक एवं अविभाज्य है। वर्तमान समय में संगीत व्यवसाय के समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, किन्तु तकनीकी विकास, वैश्विक मंचों, ऑनलाइन शिक्षा तथा नवाचारों के कारण इसकी संभावनाएँ अत्यंत उज्ज्वल हैं। आवश्यकता इस बात की है कि आर्थिक विकास और सांस्कृतिक संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित किया जाए ताकि भारतीय संगीत की समृद्ध परम्परा भविष्य में भी सुरक्षित रह सके और संगीत व्यवसाय समाज के विकास में अपनी रचनात्मक भूमिका निभाता रहे।

संदर्भ सूची

1. दत्ता, पूनम,(डॉ), भारतीय संगीत शिक्षा एवं उद्देश्य, पृ 163।
2. परांजपे, शरच्चन्द्र श्रीधर(डॉ), भारतीय संगीत का इतिहास पृ 262।
3. बैनर्जी, कुमार, आसिम, भारतीय संगीतः परिवर्तनशीलता पृ 126।
4. सक्सेना मधुबाला, सक्सेना राकेशबाला, संगीत मधुबन, पृ 210।
5. शुचिस्मिता, (डॉ), आकाशवाणी एवं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, पृ 31।
6. संगीत पत्रिका, जनवरी 1998, पृ 91।